लघुकथा की आधुनिक युग में प्रासंगिकता

प्रा. वैशाली पराग चारथल

नागपुर

charthal.vaishali1830@gmail.com

मो.क्र.8554999464

आज का दौर लघुकथा का है। नए प्रयोग, नए रंग–रूप के साथ हमें लघुकथाएं पढ़ने को मिल रही हैं। इसे लिखना आसान नहीं है। इसे इसके नियमों के साथ प्रस्तुत करना कठिन तो नहीं, हां एक मुश्किल काम जरूर है। जिसने इसे जितना साधा, तपाया, उसने उतनी ही उत्कृष्ट लघुकथा साहित्य को दी है।

प्रासंगिक का तात्पर्य एक पता लगाने योग्य, महत्वपूर्ण, तार्किक संबंध से है। किसी स्थिति या अवसर के लिए उपयुक्तता है। साहित्य का उद्देश्य आदर्श निर्माण करना है । प्रत्येक साहित्यकार समाज को आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की ओर ले जाने के लिए साहित्य सृजन करता है । इक्कीसवीं सदी के हिंदी लघुकथाकारों ने अपने लघुकथा साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं शैक्षिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है ।

लघुकथा एक छोटी कहानी नहीं है। यह कहानी का संक्षिप्त रूप भी नहीं है। यह विधा अपने एकांगी स्वरुप में किसी भी एक विषय, एक घटना या एक क्षण पर आधारित होती है। आधुनिक लघुकथा अपने पाठकों में चेतना जागृत करती है। यह किसी भी चुटकुले या व्यंग्य से भी पूरी तरह अलग है।

जीवन एक अविरल धारा है जो बहते हुए आगे बढ़ती जाती है, जिसमें बहुत कुछ पीछे छूट जाता है, तो बहुत कुछ नया जुड़ता भी जाता है। वस्तुतः यही है जीवन की विकास–यात्रा। यह सही है प्रत्येक विधा पर अपने समय, तत्कालीन राजनीति, सामाजिक परिवर्तन, मानव–मनोविज्ञान इत्यादि का प्रभाव पड़ता है, लघुकथा भी इसका अपवाद नहीं है।

साहित्य समाज का दर्पण होता है। यदि हमें अपने देश, समाज, परंपरा संस्कृति को समझना है तो उसके साहित्य के अंदर झांकना पड़ेगा। साहित्य समाज का प्रतिबिंब नहीं अपितु उन्नायक है और समाज साहित्य के लिए महत्वपूर्ण भावभूमि है। साहित्य में समाज को प्रेरित करने एवं उसे सही दिशा प्रदान करने की असीम, अनंत शक्ति होती है। इक्कीसवीं सदी में समाज के सभी स्तरों पर जो तीव्रता से बदलाव आया है । उसका प्रभाव हिंदी साहित्य पर भी व्यापक रूप से परिलक्षित होता है।

साहित्य का समाजशास्त्र से घनिष्ठ संबंध रहा है। जिसका मूल कारण दोनों के मूल में मनुष्य का होना है। समाजशास्त्र का कार्यक्षेत्र समाज और उसके सभी अंग हैं। इसी कारण समाजशास्त्र साहित्य से जुड़ जाता है, तो वहीं दूसरी ओर साहित्य भी सामाजिक संदर्भों से ही जुड़कर अपना संवेदनात्मक आकार पाता है।

लघुकथा के इतिहास पर विचार किया जाए तो उसका प्रारंभिक अस्तित्व वेद की कथाओं में देखा जा सकता है, जिन्हें हम यम–यमी, पुरुरवा– उर्वशी परिसंवाद कहते हैं और जिनका उपयोग उपरोक्त स्थापना के लिए हुआ है। व्रतकथा, लोकसंग्रह, क्षेमेंद्र व्रतकथा, मंजरी और सोमदेव व्रतकथा आदि पंचतंत्र हितोपदेश ,जातक कथा का महत्व भी अपनी श्रृंखला का तथा विशिष्टता में उल्लेखनीय स्थान रखती है। आठवें दशक के पहले लघुकथा साहित्य के हाशिए पर भी नहीं थी। साहित्य की मुख्य धारा में लघुकथा का कोई जिक्र नहीं था। उस समय के लघुकथा लेखक पूर्णतः उपेक्षित ही रहे।

"20वीं सदी के आठवें दशक में लघुकथा का आरंभ माना जा सकता है।"[1] अगर हम लघुकथा की गंगोत्री तक की यात्रा करना चाहे तो गंगोत्री की जगह बोध, नीति, उपदेश या लोक परंपरा की लोककथा ही मिलेगी। बहुत बाद में यह धारा गद्य –गीतों व भाव कथाओं से होती हुई संस्मरण, रेखाचित्र , चुटकी, परिहासकथा, प्रेरक प्रसंग तक आई और आगे वह सामाजिक यथार्थ और व्यंग्य के औजार से लैस हुई। इस लंबी विकास यात्रा में विभिन्न मोड़ आए और यह बोध, नीति, उपदेश ,दृष्टांत ,भाव कथाएं, गद्य गीत, प्रेरक प्रसंग, घटना कथा , लोककथा, संस्मरण, रेखाचित्र परिहास कथा, छोटी कहानी, मिनी कहानी और और अन्य कई नामों से जानी जाने लगी।

"परंपरा को ढूंढते वक्त यह प्रश्न भी आया कि हिंदी की पहली लघुकथा कौन– सी है। हालांकि यह कोई महत्वपूर्ण प्रश्न नहीं था, फिर भी परंपरा को जानने के लिए इस प्रश्न को अहम बना लिया गया। माधवराव सप्रे की लघुकथा, सुभाषित रत्न, छत्तीसगढ़ मित्र (बिलासपुर) में 1901 में प्रकाशित हुई। उनकी ही एक कथा रचना जिसे हिंदी की प्रथम कहानी भी माना जाता है, 'एक टोकरी भर मिट्टी', 1905

में प्रकाशित हुई। चूंकि यह छोटी कथा रचना है, अतः इसे हिंदी लघुकथा माना जाने लगा। माखनलाल चतुर्वेदी की ,संरक्षण, 1911, छबीले लाल गोस्वामी की लघुकथा ,विमाता, सरस्वती पत्रिका में सन 1915 में प्रकाशित हुई। पदुमलाल पन्नालाल बख्शी की ,झलमला, 1916 को भी हिंदी की पहली लघुकथा मानने का आग्रह किया गया। काल की दृष्टि से देखा जाए तो माधवराव सप्रे की लघुकथा ,सुभाषित रत्न, ही पहली हिंदी लघुकथा सिद्ध होती है और आधुनिक लघुकथा की अवधारणा की दृष्टि से देखा जाए तो पदुमलाल पन्नालाल बख्शी की रचना, झलमला, (1916) पहली लघुकथा सिद्ध होती है।"[2]

सुप्रसिद्ध लेखक आचार्य जगदीश चंद्र मिश्र के कई लघुकथा संग्रह प्रकाशित हुए– पंचतत्व, उड़ने के पंख, मिट्टी के आदमी, मौत की खोज ,खाली भरे हाथ और माणिक मोती जो लघुकथा साहित्य में अहम रचनात्मक देन है।

इक्कीसवीं सदी की कुछ महत्वपूर्ण लघुकथा संग्रहों की चर्चा यहां आवश्यक है। इन संग्रहों में मोहभंग, (कृष्ण कमलेश) ,भीड़ में खोया आदमी, और ,राजा भी लाचार है, (सतीश दुबे) पेट सबके है (भगीरथ), तीन न तेरह (पृथ्वीराज अरोड़ा), मृगजल (बलराम) मस्तराम जिंदाबाद (कमलेश भारतीय) सरसों के फूल (बलराम अग्रवाल) जंगल में आदमी (अशोक भाटिया) अभिप्राय व फंगस (कमल चोपड़ा) मेरी बात तेरी बात (मधुदीप) डरे हुए लोग तथा ठंडी रजाई (सुकेश साहनी), पारस दासोत, चेतना भाटी, मिथिलेश अवस्थी, सुदर्शन भाटिया, जसबीर चावला , इत्यादि लघुकथा लेखक प्रमुख है। बलराम अग्रवाल की लघुकथाएँ एक और व्यंजना शक्ति से उत्पन्न व्यंग के कई संदर्भ निर्मित करती है तो हास्य–व्यंग्य का तेवर और मिजाज भी दर्शाती है।

सुकेश साहनी का रचना संसार मध्यवर्ग की प्रवृत्तियां वैचारिकता एवं भावनाओं को व्यक्त करता है। मध्यमवर्गीय मानसिकता व पाखंड को उजागर करने में डॉक्टर दुबे का कोई सानी नहीं। वे सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था पर भी व्यंग्य की मार करते हैं। उनकी रचना 'संस्कार' लघुकथा का उत्कृष्ट उदाहरण है। लघुकथाकार की हर रचना आकार की दृष्टि से लघु है, परंतु इसमें समुद्र–सी अथाह गहराई है ।

"पत्र पत्रिकाओं का दिनोंदिन निखरता डिजिटल स्वरूप उपलब्धि के रूप में ही देखा जाना चाहिए। ,फेसबुक, तमाम साहित्यिक विधाओं के साथ लघुकथा के लिए भी एक सशक्त मंच के रूप में उभरा है। आज तमाम फेसबुक ग्रुप उपलब्ध है जिनके हजारों की संख्या में सदस्य हैं और जहां लघुकथा लेखन के गुर सिखाने से लेकर उच्चस्तरीय लघुकथाएं हर रोज प्रकाशित करने का अभियान जारी है। बड़ी

संख्या में व्हाट्सएप ग्रुप भी उपलब्ध लघुकथा के प्रचार–प्रसार का माध्यम बने हैं। छोटी होने के कारण लघुकथाएं आम जन के व्हाट्सएप मैसेजेस में भी अपना स्थान बना चुकी हैं। यह लघुकथा के उज्ज्वल भविष्य का द्योतक है।इसके अतिरिक्त समकालीन लघुकथा के विचार एवं रचना पक्ष की अव्यावसायिक ब्लॉग पत्रिकाएं एवं तमाम वेबसाइट्स भी लघुकथा की लोकप्रियता को दर्शाती है ।"[3]

आज पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित अनेक लघुकथाओ ने पाठक वर्ग का ध्यान आकर्षित किया है। लघुकथा का आकार छोटा या बड़ा हो सकता है, पर उसकी क्षमता अनंत है । अपनी बात को बहुत कम शब्दों में कह देने की अद्भुत क्षमता ने इसे आज सफल एवं प्रसिद्ध बनाया है।

आज का समय कम से कम समय में ज्यादा फायदा पहुंचाने वाली सोच का है। लघुकथा बहुत कम शब्दों में बहुत बड़ी बात कह सकती है। एक लघुकथा को एक उपन्यास में भी बदला जा सकता है या एक उपन्यास को एक लघुकथा में संक्षिप्त करके भी अपनी बात कही जा सकती है। सामाजिक विषयों को दर्शाने का अद्भुत बेमिसाल तरीका है लघुकथा, जो अपनी बात बहुत मारक तरीके से कह सकती है । ऐसी कई लघुकथाएं हैं, जो लोगों के जहन में पूरी की पूरी उतर जाती है।

हिंदी साहित्य में लघुकथा नवीनतम् विधा है। लघुकथा का प्रभाव गहरा और मारक क्षमता अचूक है। यह कमान से छूटे तीर अथवा बंदूक से निकली गोली की भांति लक्ष्य पर सीधा प्रहार करती है। इसी का परिणाम है कि आज पाठक जब पत्रिका खोलता है तो सबसे पहले लघुकथा पढ़ता है, फिर कहानी और अंत में उपन्यास। इस तरह आज लघुकथा प्रिंट मीडिया से लेकर सोशल मीडिया तक अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करवा रही है। मधुदीप के शब्दों में वर्तमान लघुकथाएँ आम आदमी की जिजीविषा को स्वर प्रदान कर रही हैं । गंभीर व सचेत लघुकथाकारों ने लघुकथा को स्थापित करने और अपेक्षित स्थान दिलवाने के लिए भरपूर प्रयास किया है । फलस्वरुप आज यह हिंदी साहित्य में अपना पृथक अस्तित्व एवं अहम स्थान बनाने में सफल है।

सारांश :–

हर लघुकथाकार अपनी प्रतिभा से लघुकथा लिखता है लेकिन उसकी कलम वहाँ सक्रिय हो उठती है जहाँ परिस्थितियाँ ठीक नहीं होती , जिन स्थितियों के केंद्र में पीड़ा, शोषण, अत्याचार होता है । आजादी के बाद हर जगह बढ़ती विसंगतियों को अभिव्यक्त करने के लिए साहित्यकार के पास लघुकथा ही एकमात्र प्रभावी साधन के रूप में उभरता है । जैसे– जैसे परिस्थितियाँ विकट होती गई वैसे–वैसे साहित्य

में लघुकथा का रूप अधिक प्रखर होता गया । हम अपने रोजमर्रा के जीवन से जुड़ी बातों को लघुकथा के माध्यम से अधिक स्पष्ट तरीके से तथा आसानी से दूसरों तक पहुँचा सकते हैं ।

लघुकथा की विकास यात्रा को आगे बढ़ाने में कई लेखकों का योगदान था। तीसरे, चौथे, पांचवें, छठे व सातवे दशक में लघुकथा के कई संग्रह प्रकाशित हुए उनका लेखा–जोखा जानना इसलिए भी जरूरी है कि हिंदी साहित्य में लघुकथा की एक समृद्ध परंपरा रही है।

आधुनिक युग के लेखक के पैनेपन ने लघुकथा के प्रभाव को और भी द्विगुणित किया है। मेरा मतलब लघुकथा के शिल्प, शैली, विषय आदि से है। इस दृष्टि से लघुकथा की प्रासंगिकता और भी उभर कर आई है, क्योंकि रचना उसके स्वरूप और आकार के बल पर प्रसिद्धि नहीं पाती, बल्कि पाठकीय प्रभाव उसे प्रसिद्धि दिलाता है।

निरंतर विकास लघुकथा ही नहीं किसी भी विधा की जीवन्तता और सामर्थ्य का परिचायक है। लघुकथा के स्वरूप के परिवर्तन, नवीन प्रवृत्तियों और उपलब्धियों पर गौर किया जाना आज और भी आवश्यक हो गया है।

अनेक अवरोधों और चुनौतियों को पार कर लघुकथा वर्तमान में एक समर्थ रूप रचना लेकर गद्यात्मक साहित्य में अपना वर्चस्व स्थापित करने में पूरी तरह सफल हो रही है।

संदर्भ संकेत :

1.भगीरथ परिहार, हिंदी लघुकथा के सिद्धांत, पृ.सं.– 1
2.भगीरथ परिहार, हिंदी लघुकथा के सिद्धांत, पृ.सं.– 3
3. डॉ. मिथिलेश दीक्षित, हिंदी लघुकथा: प्रासंगिकता एवं प्रयोजन, पृ.सं.– 69